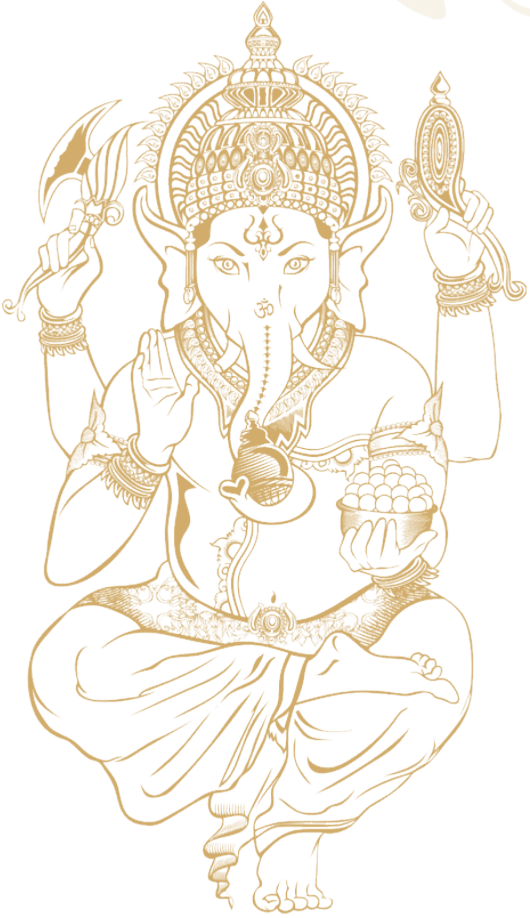

Pawan

18 Oct 1995

07:25 PM

Hanumangarh

Model: Baby-Horoscope **Order No: 120952001**

तिथि 18/10/1995 **समय** 19:25:00 **वार** बुधवार **स्थान** Hanumangarh **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:48:01
अक्षांश 29:33:00 उत्तर **रेखांश** 74:21:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:32:36 घंटे

पंचांग		अवकहड़ा चक्र	
साम्पातिक काल	20:38:44 घं	गण	राक्षस
वेलान्तर	00:14:44 घं	योनि	मार्जार
सूर्योदय	06:35:45 घं	नाड़ी	अन्त्य
सूर्यास्त	17:59:42 घं	वर्ण	विप्र
चैत्रादि संवत	2052	वश्य	जलचर
शक संवत	1917	वर्ग	श्वान
मास	कार्तिक	युँजा	मध्य
पक्ष	कृष्ण	हंसक	जल
तिथि	10	जन्म नामाक्षर	डू-डूंगरमल
नक्षत्र	आश्लेषा	पाया(रा.-न.)	लौह-रजत
योग	साध्य	होरा	सूर्य
करण	वणिज	चौघड़िया	उद्वेग

विंशोत्तरी बुध 10वर्ष 2मा 10दि शुक्र 28/12/2012 28/12/2032		योगिनी भ्रामरी 2वर्ष 4मा 23दि पिंगला 12/03/2025 13/03/2027	
शुक्र	28/04/2016	पिंगला	22/04/2025
सूर्य	29/04/2017	धान्या	22/06/2025
चन्द्र	28/12/2018	भ्रामरी	11/09/2025
मंगल	28/02/2020	भद्रिका	21/12/2025
राहु	27/02/2023	उल्का	22/04/2026
गुरु	28/10/2025	सिद्धा	11/09/2026
शनि	28/12/2028	संकटा	20/02/2027
बुध	29/10/2031	मंगला	13/03/2027
केतु	28/12/2032		

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			29:14:14	मेष	कृतिका	1	सूर्य	राहु	---	0:00			
सूर्य			00:54:41	तुला	चित्रा	3	मंगल	बुध	नीच राशि	1.32	कलत्र	पितृ	साधक
चंद्र			22:00:13	कर्क	आश्लेषा	2	बुध	सूर्य	स्वराशि	1.46	अमात्य	मातृ	जन्म
मंगल			04:33:38	वृश्चि	अनुराधा	1	शनि	शनि	स्वराशि	1.20	ज्ञाति	भ्रातृ	अतिमित्र
बुध			12:58:49	कन्या	हस्त	1	चंद्र	राहु	उच्च राशि	1.13	पुत्र	ज्ञाति	प्रत्यारि
गुरु			19:38:01	वृश्चि	ज्येष्ठा	1	बुध	शुक्र	मित्र राशि	0.91	भ्रातृ	धन	जन्म
शुक्र			16:28:23	तुला	स्वाति	3	राहु	शुक्र	मूलत्रिकोण	0.89	मातृ	कलत्र	वध
शनि	व		25:10:51	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	बुध	स्वराशि	1.11	आत्मा	आयु	मित्र
राहु	व		02:43:13	तुला	चित्रा	3	मंगल	शुक्र	मित्र राशि		---	ज्ञान	साधक
केतु	व		02:43:13	मेष	अश्विनी	1	केतु	शुक्र	मित्र राशि		---	मोक्ष	सम्पत

लग्न-चलित

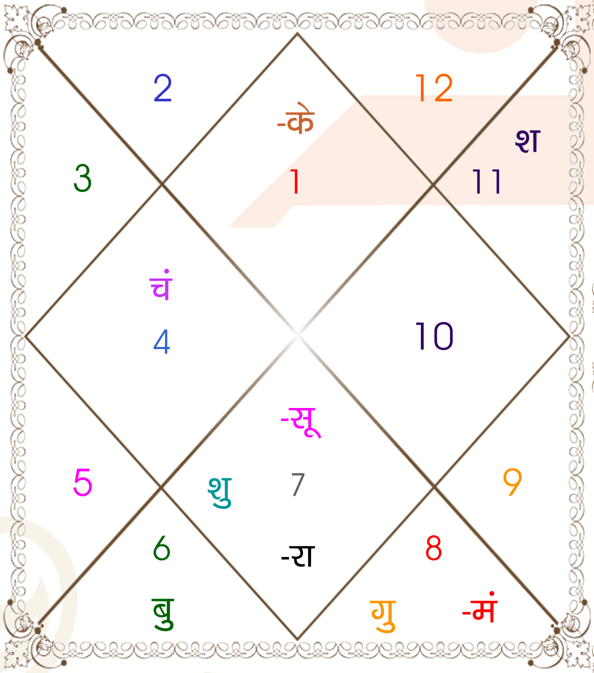

चन्द्र कुंडली

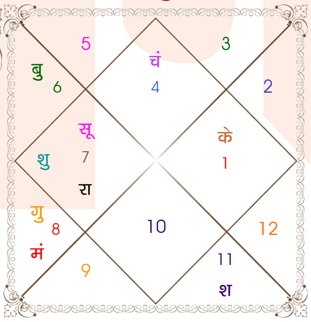

नवमांश कुंडली

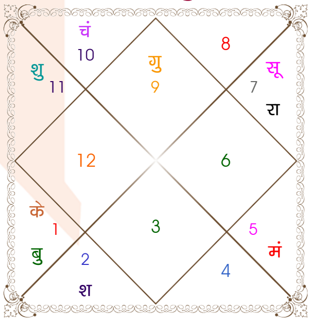

सर्वाष्टकवर्ग

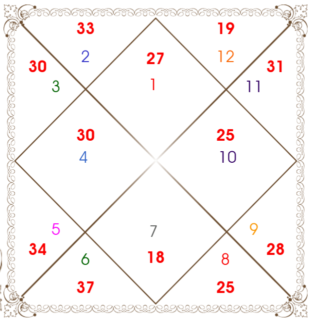

दशमांश कुंडली

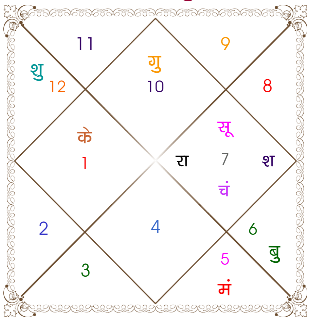

नक्षत्रफल

आप आश्लेषा नक्षत्र के द्वितीय चरण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी राशि कर्क तथा राशि स्वामी चन्द्रमा होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण विप्र, वर्ग श्वान, नाड़ी अन्त्य तथा योनि मार्जार होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम "डु" या "डू" से प्रारम्भ होगा।

आश्लेषा नक्षत्र की गणना गण्डमूल नक्षत्रों में की जाती हैं। इसके द्वितीय चरण में उत्पन्न जातक पिता के धन का नाश करता हैं। अतः इस दोष के निवारणार्थ जन्म समय में इस नक्षत्र की शास्त्रोक्त विधि विधान से अवश्य ही शान्ति करा लेनी चाहिए। इसके लिए इस नक्षत्र के कम से कम 28000 जप करवाने चाहिए तथा जब 27 दिन बाद पुनः यह नक्षत्र आवे तो उस दिन जपे मंत्रों के दशांश का हवन करना चाहिए। इससे अशुभ फलों में न्यूनता होगी तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी। यह कार्य किसी योग्य विद्वान द्वारा सम्पन्न करवाना चाहिए।

मंत्र - ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु।
ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।।

अर्थात आश्लेषा नक्षत्र में पैदा हुआ मनुष्य स्वस्थ शरीर वाला, माता पिता का भक्त, अपने धर्म में आस्था रखने वाला, नम्र, लोक में मान्य तथा धनवाहन आदि के सुख से परिपूर्ण होता है।

आप भ्रमण तथा यात्राओं में अपने अधिकांश समय को व्यतीत करने वाले होंगे। आपका स्वभाव उग्रता से परिपूर्ण रहेगा तथा आपकी उग्र चेष्टाओं से अन्य सामाजिक जन आपसे यदा कदा परेशान रहेंगे। आप धनार्जन अवश्य करेंगे परन्तु अर्जित धन को शीघ्र ही व्यय कर देंगे। आप विलासी प्रकृति के पुरुष होंगे विलासमय पदार्थो पर भी अधिक व्यय करेंगे। समाज के अन्य लोगों की वस्तुओं के प्रति आपके मन में आकर्षण रहेगा।

वृथाटनः स्यादितिदुष्टचेष्टः कष्टप्रदाश्चापि वृथा जनानाम्।
सर्पि सदर्थोहि वृथार्पितार्थः कन्दर्पसंतप्तमना मनुष्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् आश्लेषा नक्षत्र में उत्पन्न जातक व्यर्थ घूमने वाला, दुष्ट प्रकृति से लोगों को कष्ट देने वाला, अपने उत्तम धन को वुरे कर्मो में खर्च करने वाला, विलासी तथा कामातुर रहता है।

शरीर से आप स्वस्थ रहेंगे तथा कृतज्ञता की अल्प भावना से युक्त रहेंगे तथा अन्य के द्वारा अपने ऊपर किए गये उपकार को अल्प ही मानेंगे। साथ ही आप पूर्व में ही किए गए कार्यो को पुनः करने वाले होंगे।

लुब्धः खत्रजः कृशाङ्गश्च पुनः पुनः।
आश्लेषायां समुद्भूतः कृतकर्मा भविष्यति।।

अर्थात आश्लेषा में जन्मा मनुष्य लोभी, लंगड़ा, कमजोर शरीर वाला, कृतघ्न तथा किये गये कार्यों को करने वाला होता है।

खान पान में आप कोई भेद नही रखेंगे। आप शाकाहारी तथा मांसाहारी आदि का उपभोग करने वाले होंगे। आपके अधिकांश कार्य कठोर होंगे। जिससे अन्य लोग हमेशा आपसे प्रसन्न नहीं रहेंगे। यदा कदा आप मिथ्या भाषण का भी आश्रय लेंगे तथा यत्न पूर्वक अच्छे कार्यों को करने में भी तत्पर रहेंगे।

सर्वभक्षी कृतान्तश्च कृतघ्नो वञ्चकः खलः।
आश्लेषायां नरो जातः कृतकर्मा हि जायते।।
मानसागरी

अर्थात आश्लेषा में पैदा हुआ बालक सर्वभक्षी, कार्यकर्ता, कृतघ्न, ठग, दुर्जन तथा किये हुए कार्यों को करने वाला होता है।

आप में बुद्धि तथा ज्ञान मध्यम रूप से रहेगा तथा कृतज्ञतायुक्त शब्दों के प्रयोग करने में आप कुशल होंगे। साथ ही आप क्रोधी प्रकृति के भी होंगे तथा आपका आचरण भी सामान्य रहेगा।

सार्पे मूढ़मतिः कृतघ्नवचनः पापी दुराचार वान।
जातक परिजातः

अर्थात् आश्लेषा में उत्पन्न जातक मूढ़मति कृतघ्नतापूर्ण वाणी बोलने वाला, क्रोधी तथा दुराचारी होता है।

आपका जन्म लौहपाद में हुआ है। यद्यपि लौह पाद में उत्पन्न जातक प्रायः धन के अभाव से दुःखी सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार से जीवन में कष्ट प्राप्त करता है। परन्तु आपकी कुण्डली में चन्द्रमा शुभराशि में स्थित है। अतः आप अपने जीवन काल में जल से उत्पन्न होने वाले पदार्थो से नित्य लाभार्जन करते रहेंगे। आप एक धनवान पुरूष होंगे तथा अन्य चल अचल सम्पतियों के भी स्वामी बनेंगे। आप हमेशा नवीन वस्त्रों से युक्त रहेंगे एवं जीवन में वाहन आदि के सुख को प्राप्त करेंगे। साथ ही सुयोग्य संतति से भी आप युक्त रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा तथा बन्धु एवं मित्रों से आपके संबंध अत्यन्त ही मधुर रहेंगे एवं उनसे आपको यथोचित सहयोग प्राप्त होता रहेगा। जीवन में आवश्यक भौतिक सुखसंसाधनो से आप प्रायः सुसम्पन्न रहेंगे। साथ ही दानशीलता का भाव भी आपके मन में विद्यमान रहेगा। जल क्रीड़ा के आप शौकीन होंगे तथा इससे हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त करेंगे।

कर्क राशि में उत्पन्न होने के कारण आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। आप

अपने सभी कार्यों को चतुराई तथा कुशलता से पूर्ण करने में सफलता प्राप्त करेंगे तथा अपने जीवन में अधिक मात्रा में धनार्जन करेंगे। जिससे समाज में धनाढ्य कहलांएगे। पराक्रम का आप में अभाव नहीं रहेगा। तथा धार्मिक भावना का समावेश भी आपके अर्न्तमन में रहेगा फलतः समस्त धार्मिक कार्य कलापों को विधि पूर्वक सम्पन्न करेंगे। अपने श्रेष्ठ तथा गुरूजनों के आप हमेशा प्रियवत्सल रहेंगे तथा उनसे पूर्ण सहयोग तथा स्नेह की प्राप्ति करेंगे। आप तीव्र बुद्धि के स्वामी भी होंगे। यदा कदा आप में क्रोध की भी अधिकता दृष्टिगोचर होगी तथा आप अत्यन्त दुःख का भी कभी अहसास करेंगे। आपके समस्त मित्रगण अच्छे तथा गुणवान होंगे। आप अन्य कार्य तथा कलाओं के भी विशेषज्ञ होंगे। शारीरिक बल आप में मध्यम ही रहेगा। तथा घर से दूर अन्यत्र भी आप निवास कर सकते हैं।

कार्यकारी धनीशूरो धर्मिष्ठो गुरूवत्सलः।
शिरो रोगी महाबुद्धिः कृशाङ्गः कृत्यवित्तमः।।
प्रवासशीलः कोपाढ्योडबलो दुःखी सुमित्रकः।
अनासक्तो गृहे वक्रः कर्कराशौ भवेन्नरः।।
मानसागरी

आपकी प्रकृति वात तथा कफ से मिश्रित रहेगी। आप अत्यन्त सुन्दर एवं अलौकिक तेज से युक्त पुरूष होंगे तथा अपने परिश्रम से कमाए गए धन से आजीवन धन के स्वामी बनेंगे। देवताओं तथा ब्राहमणों के प्रति आप विशेष रूप से श्रद्धालु रहेंगे तथा अवसरानुकूल इनका पूजन तथा सत्कार करते रहेंगे। उत्तम कुल में उत्पन्न लोगों के प्रति आपके मन में सेवा भाव रहेगा तथा इनको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

पवनकफशरीरो देव संकाश रूपः।
स्वयमुपचित्तवित्तो देवताविप्रभक्तः।।
कुलजन परिसेवी मण्डलाकार मध्ये।
भवति विपुलवित्तः कर्कटौ यस्यराशिः।।
जातक दीपिका

आप वेदादिशात्रें के ज्ञान की प्राप्ति के लिए नित्य रूचिशील तथा यत्नशील रहेंगे एवं इस उद्धेश्य में सफलता भी प्राप्त करेंगे साथ ही कलाओं के विषय में भी आपको विस्तृत ज्ञान रहेगा। आचरण से आप उत्तम तथा प्रशंसनीय रहेंगे। आप फूलों की सुगन्ध तथा जलक्रीड़ा करने में अत्यन्त आनन्द एवं हर्ष की अनुभूति करेंगे। इसके अतिरिक्त अपनी बुद्धिमता से आप समाज में यशस्वी बनेंगे।

श्रुतकलाबलनिर्मलवृतयः कुसुमगंध जलाशयकेलयः।
किल नरास्तु कुलीरगते विधौ वसुमतीसुमती स्मितलब्धयः।
जातकाभरणम्

आपका गला स्थूल होगा तथा स्त्रीजाति से आप पूर्ण रूप से पराजित रहेंगे। आपके मित्र सुमित्र होंगे तथा जलविहार से आप आनन्दानुभूति प्राप्त करेंगे। आपके द्वारा बहुत से

भवनों का निर्माण भी किया जाएगा अथवा आप बहुत से भवनों के स्वामी हो सकते हैं। कद में आप सामान्य होंगे तथा टेढ़ी चाल से शीघ्र चलना आपकी प्रवृति रहेगी इसके अतिरिक्त पुत्र भी आपके अल्प मात्रा में ही उत्पन्न होंगे।

स्त्रीनिर्जितः पीनगलः सन्मित्रो वहवालयास्तुकटि्र्धनाढ्यः।
ह्रस्वश्च वक्रो द्रुतगः कुलीरे मेधान्वितस्तोयरतोऽल्प पुत्रः।।
फल दीपिका

आप अपने जीवन में नाना प्रकार की सम्पत्तियों तथा सुखों की प्राप्ति करेंगे। साथ ही आप ज्योतिषशास्त्र के भी जानने वाले होंगे। आपका सम्पूर्ण जीवन चन्द्रमा की कलाओं के समान क्षय वृद्धि अर्थात् उतार चढ़ाव से युक्त रहेगा तथा आपको जीवन में बहुत संघर्ष करने पड़ेंगे। आप प्यार से वशीभूत हो सकते हैं। दवाब या बलपूर्वक आपसे कुछ भी करवाना कठिन कार्य होगा। मित्रों को आप पूर्ण सम्मान प्रदान करेंगे अतः मित्र मंडली में सबके प्रिय रहेंगे। आप सदैव जीवपालन, उद्यान बगीचे तथा जलाशयादि के निर्माण में तत्पर तथा रूचिशील रहेंगे।

आवक्रद्रुतगः समुन्नतकटिः स्त्रीनिर्जितः सत्सुहृद्।
देवज्ञा प्रचुरालयः क्षयधनैः सयुंज्यतेः चन्द्रवत्।।
ह्स्वः पीनगलः समेति च वशं साम्ना सुहृदवत्सलः।
तोयोद्यानरतः स्ववेश्मसहितै जातः शशाङ्कैः नरः।।
बृहज्जातकम्

सौभाग्य आजीवन आपकी उन्नति में महत्वपूर्ण सहायक सिद्ध होगा। आपके समस्त कार्य धैर्यपूर्वक सम्पन्न होंगे शीघ्रता तथा उतावली का आप में सर्वथा अभाव रहेगा। गृह से आप युक्त रहेंगे तथा आप अपना अधिकांश समय भ्रमण करने या यात्राओं आदि में व्यतीत करेंगे। सामाजिक जनों से आप अत्यन्त विनम्रता का व्यवहार रखेंगे। सैक्स की प्रबलता भी आप में विद्यमान रहेगी। साथ ही अन्य जनों द्वारा उपकृत होने पर आप उनको हार्दिक धन्यवाद प्रदान करेंगे। आप राज्य या सरकार में किसी ऊंचे पद को प्राप्त करने में भी सफलता प्राप्त कर सकेंगे। सत्य का अनुपालन आपके जीवन का मुख्य लक्ष्य रहेगा तथा सत्य एवं प्रिय भाषण के लिए हमेशा यत्नशील रहेंगे।

युक्तः सौभाग्ययोग्यैगृह सुहृदरटन ज्यौतिषज्ञान शीलैः।
कामासक्तकृतज्ञः क्षितीपतिसचिवः सत्प्रमाण प्रवासी।।
सोन्मादः केशकल्पो जलकुसुमरूचि र्हानिवृद्धयानुयातः।
प्रासादोद्यानवाणीप्रियकरणरतः पीनकण्ठः कुलीरे।।
सारावली

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आप नैसर्गिक रूप से अधिक बोलने वाली प्रकृति के व्यक्ति होंगे तथा आपके हृदय में भी दया एवं करूणा के भाव भी अल्प ही रहेगा। आपके कार्य साहस के साथ सम्पन्न होंगे। अधिकतर आप साहसिक कार्यों को ही सम्पन्न करेंगे। आप शीघ्र ही उत्तेजित हो जाएंगे तथा छोटी छोटी बातों पर क्रोधित होते रहेंगे। अपने

कार्यसिद्धि के लिए आप किसी भी सीमा तक जा सकेंगे। आपमें शारीरिक बल की भी प्रधानता रहेगी तथा अन्य जनों से आप बात बात पर वाद विवाद करने के लिए तैयार हो जाएंगे। इस प्रकार के कार्यों से समाज में यदा कदा लोगों से आपका वैमनस्य का भाव भी चलता रहेगा।

आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी पीड़ित रह सकते हैं। आपका चेहरा देखने में दीर्घ होगा तथा वाणी भी कभी कभी कठोरता से युक्त होगी जिसे श्रोता सुनना पसन्द नहीं करेंगे। अतः अपने सम्भाषण में प्रायः मधुर एवं सरल शब्दों का ही उपयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

मार्जार योनि में पैदा होने के कारण आप स्वभाव से ही वीरता तथा साहस से सम्पन्न रहेंगे। आप अपने समस्त कार्यों को करने में निपुण रहेंगे। मीठा भोजन तथा मीठा पेय आपके प्रिय रहेंगे तथा इनके सेवन से आप अत्यन्त सन्तोष तथा आनन्द का अनुभव करेंगे। भय का आप में अभाव रहेगा तथा निर्भय होकर आप अपने जीवन पथ पर क्रमशः अग्रसर होते जाएंगे। परन्तु कभी कभी आपके स्वभाव में दुष्टता का आवागमन होगा फलतः आपकी बुद्धि कठोरकार्यों की ओर भी प्रवृत होगी।

शूरः स्वकार्यदक्षश्च मिष्ठानपान भक्षकः।
निर्भयो दुस्वभावश्च नरो मार्जार योनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मार्जार योनि में उत्पन्न बालक वीर, अपने कार्यो को निपुणता से करने वाला, मिष्ठानपान भक्षण प्रेमी तथा दुष्ट स्वभाव वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति चतुर्थ भाव में होने से माता का शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके प्रति उनका प्रगाढ़ स्नेह रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार की सुख सुविधाएं तथा अन्य सुखों को वे आपको प्रदान करेंगी। आपके मध्य मतभेद अल्प ही रहेंगे अतः परस्पर संबंध मधुर रहेंगे। साथ ही वाहनादि की प्राप्ति में भी वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी तथा कभी भी कोई कठिनाई का सामना नहीं करने देंगी।

आप भी उनका हमेशा हार्दि सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा एवं निर्देशों को मानने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। साथ ही अपने जीवन काल में उनकी श्रद्धापूर्वक सेवा करेंगे तथा आवश्यक सुखसुविधाओं को भी प्रदान करेंगे। इस प्रकार आपके परस्पर संबंध मधुर एवं सुदृढ रहेंगे तथा जीवन को प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य सप्तम भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य

अच्छा रहेगा एवं शारीरिक कष्ट की अनुभूति नहीं होगी। उनकी आयु भी लम्बी होगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। विविध प्रकार से धनार्जन करने में वे सफल रहेंगे तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना हार्दिक सहयोग देते रहेंगे। साथ ही आपके विवाह सम्पन्न करने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा एवं आप उनके विश्वास पात्र भी रहेंगे।

आप भी उनका पूर्ण सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता हैं। फिर भी आप नित्य उनकी सेवा तथा वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल अष्टम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव भी विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे प्रायः युक्त रहेंगे एवं यथाशक्ति जीवन में आपको अपना सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे। साथ ही यदा कदा आप उनसे विशेष रूप से आर्थिक सहयोग भी प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी वे आपका साथ देंगे तथा अपनी ओर से कोई भी कष्ट नहीं होने देंगे।

आप भी उनको हार्दिक सम्मान प्रदान करेंगे तथा उनकी सहायता करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आप के आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह तनाव अस्थाई रहेगा एवं शीघ्र ही समाप्त हो जाएगा। जीवन में आप सभी विषम परिस्थितियों में सर्वदा उनकी अपनी ओर से वांछित सहायता प्रदान करते रहेंगे।

आपके लिए पौष मास, द्वितीया, सप्तमी तथा द्वादशी तिथियां, अनुराधा नक्षत्र, व्याघात योग, नागकरण, बुधवार तृतीय प्रहर तथा सिंह राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फलदायक है। अतः आप 15 दिसम्बर से 14 जनवरी के मध्य 2,7,12 तिथियों तथा उपरोक्त योगों में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य का भी पूर्ण रूप से ध्यान रखना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक या शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में व्यवधान उत्पन्न हो रहे हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव शंकर भगवान को नित्य शिवालय जाकर विल्वपत्र अर्पण करने चाहिए तथा नियमित रूप से सोमवार के उपवास करने चाहिए। साथ ही आपको श्रद्धापूर्वक श्वेतमोती, श्वेत वस्त्र, श्वेत चन्दन, श्वेत पुष्प, चावल इत्यादि पदार्थो का भी श्रद्धापूर्वक दान देना चाहिए। इसके अतिरिक्त चन्द्रमा के तांत्रीय मंत्र के 10000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा शुभ फल भी प्राप्त होंगे।

ऊँ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं सोमाय नमः।